

प्राचीन कलाएँ और आधुनिक इतिहास का नया युग

रेखा शर्मा, शोधकर्ता (इतिहास विभाग), नीलम विश्वविद्यालय, कैथल (हरियाणा)

सारांश

प्राचीन कलाएँ किसी भी सभ्यता की सांस्कृतिक स्मृति, सामाजिक संरचना और ऐतिहासिक चेतना को समझने का महत्वपूर्ण माध्यम हैं। प्रस्तुत अध्ययन में प्राचीन भारतीय कलाओं और आधुनिक इतिहास के बीच विकसित होते संबंधों का विश्लेषण किया गया है। चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तुकला, हस्तशिल्प, लोककला, संगीत तथा नृत्य जैसी प्राचीन कला-परंपराओं ने विभिन्न ऐतिहासिक कालखंडों में समाज के धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक जीवन को अभिव्यक्त किया। आधुनिक युग में इन कलाओं का अध्ययन केवल सौंदर्यबोध तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इन्हें इतिहास-लेखन, पुरातत्व, संग्रहालय-विज्ञान, सांस्कृतिक संरक्षण और पहचान के महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में देखा जाने लगा है। अध्ययन यह भी रेखांकित करता है कि आधुनिक तकनीक, डिजिटलीकरण, वैश्वीकरण और नए संचार माध्यमों ने प्राचीन कला के संरक्षण तथा प्रसार के नए अवसर उत्पन्न किए हैं। डिजिटल अभिलेखागार, आभासी संग्रहालय और आधुनिक शोध-पद्धतियाँ प्राचीन कलाकृतियों को व्यापक दर्शक वर्ग तक पहुँचाने में सहायक हो रही हैं। साथ ही, व्यावसायीकरण, सांस्कृतिक विरासत के क्षरण, प्रामाणिकता और पारंपरिक ज्ञान के संरक्षण जैसी चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। अध्ययन का निष्कर्ष है कि प्राचीन कलाओं और आधुनिक इतिहास के बीच संवाद अतीत को समझने के साथ-साथ वर्तमान सांस्कृतिक पहचान को मजबूत करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इन परंपराओं का संरक्षण आधुनिक समाज की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक जिम्मेदारी है।

मुख्य शब्द: प्राचीन कला, आधुनिक इतिहास, भारतीय संस्कृति, सांस्कृतिक विरासत, कला संरक्षण, पुरातत्व, वास्तुकला, लोककला, डिजिटलीकरण, सांस्कृतिक पहचान, इतिहास-लेखन, वैश्वीकरण।

